P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महिलाओं की राजनीति में भूमिका, दक्षिण एशिया के विशेष सन्दर्भ में

अंशुबाला
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति शास्त्र विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
विन्दकी, फतेहपुर

सारांश

हम देखते हैं कि दक्षिण एशिया में महिलाओं को दोयम दर्जा एकाएक नहीं बल्कि यहाँ सामन्तवादी व्यवस्था की देन है। यहाँ जो व्यवस्था स्वतन्त्रता के पश्चात अपनायी गयी ज्यादातर यह पश्चिम के प्रभाव से प्रभावित रही है देश, काल, परिस्थिति के अनुसार विकसित नहीं हुयी है। यहाँ अभी न्यायाधीश मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तथा मुख्य पद पर आसीन महिलाओं के जो कतिपय उदाहरण हम देखते हैं। वह अधिकांश सम्भ्रान्त परिवार से आती है। आम आधुनिकीकरण का प्रभाव दक्षिण एशिया में महिलाओं की बराबरी की सोंच अभी तक विकसित नहीं हो पायी है। आधुनिकीकरण का प्रभाव दक्षिण एशिया में महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु सकारात्मक रहा है किन्तु इस दिशा में और अधिक प्रयास करना होगा।

मुख्य शब्द : राजनीति, दक्षिण एशिया, महिलाएं नारीवादी विमर्श सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

नारीवादी विमर्श का आरम्भ महिलाओं को पराधीन करने वाली जटिल संरचनाओं के दृष्टिकोण को समणने को लेकर हुआ। विश्व की आधी आबादी जो पिछड़ रही थी महिलाओं के आधीनता के विरोध में सम्पूर्ण विश्व में नारीवादी विचारकों ने आन्दोलन चलाये। सामाजिक, राजनीति तथा आर्थिक परिवर्तन का प्रयास किया।

1945 ई0 तक पश्चिम में नारीवादी आन्दोलन काफी प्रभावी भूमिका में आ चुका था। यह इसकी तीन प्रमुख धारायें उदारवादी नारीवादी, समाजवादी तथा रेडिकलवादी नारीवादी के रूप में आया।

अठारहवीं शताब्दी में उदारवादी नारीवादी विचारकों ने समानता, न्याय तथा महिलाओं की राजनीति में सहभागिता तथा सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में बदलाव को स्वीकार किया इसमें प्रमुख वोलस्टोन क्राफ्ट ने अपने लोख–"Vindication of the right of Women" मे महिला अधिकारों का समर्थन किया। दूसरी धारा समाजवादी जो पितृसता को महिला सशक्तिकरण में सबसे बड़ी बाधा मानता था तथा आर्थिक सत्ता पर महिलाओं के अधिकार से ही उनकी स्थिति में परिवर्तन सम्भव है को स्वीकार किया क्योंकि अर्थव्यवस्था पर ही राजनीति, समाज तथा संस्कृति निर्भर करती है।

तीसरी धारा रेडिकल वादी जिन्होंने पुरूषों द्वारा महिलाओं के उत्पीड़न को समाज में व्याप्त सब प्रकार के सत्ता सम्बन्धों को गैर बराबरी की जड़ में देखा। इसका उदय अमेरिका में हुआ 1960 के दशक में यह चरम पर था। इन्होंने महिलाओं को जबरन मातृत्व तथा यौन उत्पीडत्रन से मुक्ति को बल दिया। रेडिकाल वादियों ने माना कि पुरूष महिलाओं के शरीर पर नियन्त्रण कर उन्हें आधीन रखते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

दक्षिण एशिया में महिलाओं की राजनीति में भूमिका ।

साहित्यावलोकन

एशिया महाद्वीप का दक्षिणतम भाग जो दक्षिण एशिया कहलाया। जिसे प्रो0–एस.डी. मूनी ने भारत केन्द्रित क्षेत्र के रूप मे स्वीकार किया। वर्तमान में इस क्षेत्र में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, मालद्वीव, श्रीलंका तथा अफगानिस्तान को सम्मिलित किया गया है। दक्षिण एशिया के ज्यादातर देश जो द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात स्वतन्त्र हुये यहाँ महिलाओं की आधीनता की प्रमुख विशेषता में प्रथम विचाराधारा के आधार पर–महिलाओं में कर्तव्य परायणता, पवित्रता की आकांक्षा द्वितीय कानून, संहिता में निहित रीतिरिवाज जो पुरुष प्रधानता पर बल देने वाला तीसरा–राज्य जो महिलाओं को सहयोगी बनाने के

लिये परोपकारी पैतृकवाद अर्थात् स्त्रियों के आज्ञाकारी होने पर बल देता है। इसके साथ यह इस्लाम धर्म में महिलाओं को सहयोगी बनाने के लिये परोपकारी पैतृकवाद अर्थात स्त्रियों आज्ञाकारी होने पर बल देता है। इसके साथ यह इस्लाम धर्म में महिलाओं की पर्दा प्रथा इनके स्वतंत्रता पर प्रहार करता है। दक्षिण एशिया के देशों राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं ने सक्रिय सहभागिता किया है। सामाजिक सुधार आन्दोलनों तथा राष्ट्र निर्माण में इनकी सहभागिता का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। स्वतंत्रता के पश्चात यह अवधारणा आयी कि महिलाओं की स्थिति में सुधार तब तक नहीं हो सकता जब तक वह निर्णय प्रक्रिया में सहभागी नहीं होती इसके लिए राजनीतिक सहभागिता आवश्यक है। महिलाओं के लिए मताधिकार की मांग 1917 में सरोजनी नायडू ने किया था। महात्मा गांधी ने कहा था "महिलाओं को वोट देने का अधिकार और बराबर का कानूनी दर्जा मिलना चाहिए" लेकिन समस्या समाप्त नहीं होती। यह उस बिन्दु से शुरू होती है जहाँ महिलाएं देश की राजनीति पर असर डालना शुरु करेंगी। 15 अगस्त 1947 को दक्षिण एशिया का प्रमुख राष्ट्र भारत जो ब्रिटिश आधीनता से मुक्त हुआ यहाँ महिलाओं की राजनीति में सहभागिता वैदिक काल से रही है। अपाला, घोषा जैसी विदुषी महिलाएं गोष्ठियों में भाग तथा शास्त्रार्थ करती थीं बाद में धीरे धीरे महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ शासन प्रक्रिया में सहभागिता कम हुयी। मध्य काल में इस्लाम धर्म के आगमन तथा मुस्लिम शासन काल में रजिया सुल्ताना जो गुलाम वंश में पहली महिला शासिका बनीं किन्तु अधिकांश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ीं रहीं। ब्रिटिश काल में रानी लक्ष्मी बाई जैसी वीरांगना ने राष्ट्रीय आन्दोलन मे अपनी वीरता को सिद्ध किया।

Country	Total Seats (2017)	Percentage (2017)
Pakistan	342	20.0%
India	541	11.6%
Srilanka	225	5.8%
Nepal	275	29.6%
Bangladesh	350	20.3%
Bhutan	47	8.3%
Maldives	87	5.9%

Source: UNDP-HDR Reports (2018)

स्वतन्त्र भारत में पहली लोकसभा में 43 महिला प्रत्याशी जो चुनाव के लिए खड़ी हुयीं उनमें से 14 विजयी हुयीं। इस पर पं0 जवाहर लाल नेहरू ने महिला सहभागिता की कमी पर अफसोस भी व्यक्त किया। उन्होंने कहा हमारे कानून हमारे समाज में सब जगह पुरुषों का वर्चस्व है और हम सबका इसको लेकर एकतरफा रवैया है लेकिन अन्त में महिलाएं ही भविष्य की निर्मात्री होंगीं।

महिलाओं की राजनीति में भागीदारी के सन्दर्भ में 1974 में एक समिति गठित की गयी तथा महिला की सांवैधानिकसंस्थाओं में सहभागिता महिलाओं के उठे प्रश्न ने आरक्षण के माध्यम से उनके प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने अवधारणा का विकास किया। सन् 1988 तथा 2000 ई0 में लोकतंत्र की आधारशिला संस्था पंचायतों में 30 प्रतिशत महिलाओं के आरक्षण का सुझाव रखा गया। 1993 ई0 में पंचायती राज तथा नगरीय स्वशासन को सांवैधानिक दर्जा मिलने पर महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सहभागिता को कानूनी अधिकार दिया जाये। राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की राजनीति में सहभागिता के लिए 1996 में लोकसभा में यूनाइटेड फ्रन्ट सरकार ने 81वाँ संविधान संशोधन बिल पास किया गया। पुनः 1998 तथा 2008 की यूपीए सरकार ने भी प्रस्तुत किया राजनीतिक दलों में ही आपसी मतभेद के कारण यह बिल अभी तक पास नहीं हो पाया। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में शीर्ष स्तर की राजनीति में श्रीमती इन्दिरा गाँधी देश की पहली महिला प्रधानमंत्री कई राज्यों मे महिला मुख्यमंत्री के रूप में महिलाओं की राजनीति में सहभागिता की दिशा में प्रेरक स्रोत रहीं। उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती 3 बार पद पर आसीन हुयीं इसके अतिरिक्त जयललिता, ममता बनर्जी, राबड़ी देवी जैसी महिला राजनीतिज्ञों ने भी राज्यों की मुख्यमंत्री के रूप में राज्यों की राजनीति में सक्रिय सहभागिता की है तथा लोकसभा स्पीकर के रूप में श्रीमती मीरा कुमार एवं श्रीमती सुमित्रा महाजन ने संसद की कार्यवाही का संचालन बड़ी ही बुद्धिमत्तापूर्वक किया है। लोकसभा के विपक्ष के नेता के रूप में श्रीमती सुषमा स्वराज भी भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से सहभागी रहीं हैं। हम देखते हैं कि देश की आधी जनसंख्या बहुत प्रतिशत भाग ही राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय सहभागी रहा है जिसमें अधिकांश संभ्रान्त परिवार से सम्बद्ध रहीं हैं। साधारण या आम महिला अभी भी राजनीति की सक्रिय सहभागिता से दूर है। उन्हें कुछ और कदम बढ़ाने होंगें या यहाँ तक कि ग्रामीण क्षेत्रों के महिलायें अपने वोट देने के अधिकार का प्रयोग भी अपने परिवार के पुरूषों से प्रभावित होकर ही करती रहीं हैं। ग्राम पंचायतों में उनकी सहभागिता सुनिश्चित होने पर भी बहुत अधिक सकरात्मक परिणाम नहीं आयें हैं कुछ समस्यायें हैं जिन्हें दूर करना होगा जिससे कि उनको दिया गया सांवैधानिक अधिकार कानूनी मात्र न रह कर व्यवहारिक धरातल पर फलीभूत हो।

पाकिस्तान में महिलाओं की स्थिति अन्य मध्य एशिया के मुस्लिम राष्ट्रों की अपेक्षा सुधरी अवस्था में है पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के शैक्षिक स्तर में सुधार हुआ है। आधुनिक औद्योगिक समाज में मुस्लिम राष्ट्रों में भी महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में सुधार के लिये आन्दोलन हुये। पाकिस्तान के जन्मदाता मोहम्द अली जिन्ना पाकिस्तान में महिलाओं की राष्ट्रीय राजनीति में प्रतिनिधित्व के प्रति सकारात्मक रूख रखे हुये थे। जिन्ना ने सेन्ट्रल महिला कमेटी का गठन फतिमा जिन्ना के प्रतिनिधित्व में किया जिन्होंने मुस्लिम लीग पार्टी में महिलओं के कोटे की बात की। 1956 से 1962 तक राष्ट्रीय सभा में 6 सीटें महिलाओं के लिये आरक्षित की गयी तथा 1973 के संविधान के अनुसार सीटें बढ़ाकर 10 कर दी गयी तथा 2002 ई0

में जनरल मुशर्रफ ने यह पुनः बढ़ाकर 60 कर दी। स्थानीय स्वशासन में सीटें महिलाओं के लिये आरक्षित की गयी। पाकिस्तान में सर्वप्रथम देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो जो पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो की बेटी बनी थीं। उन्होंने दक्षिण एशिया की राजनीति में एक सशक्त राजनीतिज्ञ के रूप में कार्य किया। देश की राष्ट्रीय असम्बेली की स्पीकर के रूप में सर्वप्रथम महिला स्पीकर फामिदा मिर्जा चुनी गयी। पाकिस्तान में राजनीतिक दलों में महिला की सहभागिता अभी तक सन्तोषजनक स्थिति तक नहीं पहुंची है। राजनीतिक दलों में महिलायें जो भी वे ज्यादातर परिवारवाद से राजनीति में सहभागी हैं। यहाँ पर अभी भी सामन्तवादी और पितृसत्तामक सोंच में परिवर्तन नहीं हुआ है। इस्लामिक कट्टरपंथी यहाँ महिलाओं की स्वतन्त्रता का विरोध करते रहे हैं तथा धर्म में महिलाओं की सहभागिता का विरोध करते हैं।

हम देखते हैं कि पाकिस्तान में भी जहाँ कि 50 प्रतिशत आबादी महिला है वहाँ की राजनीति में सहभागिता कभी भी एक चौथाई भी महिलाओं की राष्ट्रीय राजनीति में नहीं रही है।

बांग्लादेश के गठन के पश्चात वहाँ के संविधान के अन्तर्गत 15 सीटें 10 वर्ष के लिये महिलाओं के लिए जातीय संसद में आरक्षित कर दी गयी थी। बाद में फिर से 15 वर्ष के लिये बढ़ा दी गयी। वर्तमान में जातीय संसद में महिलाओं के लिये 45 सीटें आरक्षित की गयी है। 1992 के पश्चात से देश की राष्ट्रीय राजनीति में दो प्रमुख राजनीतिक दल आवामीलीग तथा बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी प्रमुख शेख हसीना तथा बेगम खलिदा जिया ही प्रभावी रही है बांग्लादेश के जन्मदाता शेखमुर्जीबुरहमान की बेटी शेख हसीन तथा बेगम खलिदा जिया जो जियाउर्ररहमान की बेटी शेख हसीना तथा बेगम खलिदा जिया जो जियाउर्ररहमान की पत्नी है यहाँ की राष्ट्रीय राजनीति में प्रभावी रहीं है।

2007 में मुख्य निर्वाचन आयोग ने राजनीतिक दलों से महिलाओं के 33 प्रतिशत सीटों पर टिकट देने का सुझाव रखा। महिलाओं सहभागिता मात्र कोटा पूरा होना नहीं वरन् एक दृढ़ इच्छाशक्ति महिलाओं के प्रतिनिधित्वों को बढ़ाने के लिये प्रयास करना होगा। दक्षिण एशिया के अन्य देशों की अपेक्षा बांग्लादेश की राष्ट्रीय राजनीति में महिलाओं की सहभागिता अधिक रही है। यहाँ कि राजनीति देश की दो प्रमुख महिला राजनीतिक शेख हसीन तथा बेगम खालिदा जिया के इर्द गिर्द ही प्रभावी रही है।

श्रीलंका आधुनिक जगत में श्रीलंका प्रथम राष्ट्र है जहाँ सर्वप्रथम महिला देश के सर्वोच्च पद पर आसीन रही है यहाँ शैक्षिक दृष्टिकोण से महिला तथा पुरुष साक्षरता दर में विशेष अन्तर नहीं है। सिरामाओं भण्डार नायके तथा चन्द्रिका कुमार तुंगे जैसी सशक्त महिला राजनीतिज्ञों ने श्रीलंका की राजनीति में प्रभावी भूमिका निभायी है देश में नस्लीय संघर्ष सिघली तथा तमिलों के मध्य ने यहाँ की राजनीतिक प्रक्रिया के विकास में नकारात्मक भूमिका निभायी है। यह स्थानीय स्तर पर महिलाओं के लिये 30 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गयी है। यहाँ महिला संगठनों ने महिलाओं की राजनीतिक संस्थाओं में सहभागिता समानता तथा न्यायपूर्ण दृष्टिकोण से करने की समय–समय पर मांग किया है। महिलाओं के प्रति राजनीतिक संस्कृति में सोंच में परिवर्तन की आवश्यकता है। वर्तमान संसद में 5.8 प्रतिशत तथा प्रान्तीय स्तर की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 1.8 प्रतिशत है। श्रीलंका की प्रशासनिक संस्थाओं तथा राजनीतिक संस्थाओं में महिला प्रतिनिधित्व पिछले 15 वर्षों में बढ़ा है, किन्तु अपेक्षा अनुसार 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व तक पहुंचा अभी भी कल्पना मात्र है।

नेपाल में सदियों तक राजतन्त्रात्मक व्यवस्था रही है। यह विश्व का एक मात्र हिन्दू राष्ट्र था। 2008 में जनआन्दोलन के माध्यम से राजतन्त्र का अन्त किया गया तथा सांवैधानिक तन्त्र का अन्त किया गया तथा सांवैधानिकतन्त्र का गठन हुआ यहाँ का संविधान अभी भी निर्माण की अवस्था में है देश के अन्तरिम सरकार का गठन हुआ यहाँ का संविधान अभी भी निर्माण की अवस्था में है देश के अन्तरिम सरकार का गठन किया गया। यहाँ पुरुष प्रधान समाज है। 1990 के दशक में नीति निर्धारकों नें महिला की राजनीति सहभागिता पर प्रकाश डाला। महिला सशक्तिकरणके न्दिुओं को दृष्टिगत किया गया। यहाँ की संविधान सभा में 33.2 प्रतिशत महिलाओं को प्रतिनिधित्व दिया गया है।

अफगानिस्तान एक मात्र राष्ट्र जहाँ पिछले शताब्दी में राजाओं ने महिलाओं की स्थिति में लिये संघर्ष किया किन्तु तालिबान के काल में यहाँ महिलाओं की स्थिति दयनीय हो गयी इनकी स्थिति में सुधार के लिए मानवाधिकार आयोग को आगे आना पड़ा सांवैधानिकसरकार के गठन के पश्चात यहाँ हामिद करजई के नेतृत्व वाली सरकार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिये राजनीति में इनकी सहभागिता के लिये 29 महिलाओं को अपने मंत्री मण्डल में शामिल किया। यहाँ 2003–05 में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने महिला अधिकार के प्रति यहाँ अथक प्रयास किया।

मालद्वीव 1965 में ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त हुआ। 1990 के दशक में आयी भूमण्डलीयकरण तथा आधुनिकीकरण के लहर में सीमित संसाधनों के साथ विकास इसके लिये एक चुनौती रहा है। यहाँ इस्लाम धर्म के अधिकांश लोग रहते हैं। यह महिलाओं की समाज में स्थिति दोयम दर्जे की है। तथा राजनीति में इनका प्रतिनिधित्व लगभग न के बराबर है भूटान जो सदियों तक राजतन्त्रात्मक स्वरूप में रहा है। यहाँ के राजा के प्रयास से ही लोकतन्त्र की स्थापना हई यहाँ महिलायें राजनीति की नीति निर्णय प्रक्रिया में सहभागी नहीं रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Afganistan Women's right', Evaluation Report by the Afganistan independent Human right commission, 2007 www.ai.hrc.org.

British Broad casting Service, "Afg, women suffer violence" December 26, 2006 www.bbcmew/com

Gandhi, M.K. 1929 in Young India, 17 Oct.

Jaggar, Alisim. M, Feminist Politics and Humen Nture, Haruester Press.

साधना आर्य, निवेदिता मेमन जिनी लोकनीत "नारीवादी संघर्ष एवं राजनीति" हिन्दी माध्यम कार्यान्वय, निदेशालय, नई दिल्ली।

Kearney N Robert-Women Politics in Srilanka

'The opinions expressed in this article are those of the author, and do not represent the views of any organisation. [Google Scholar 2018]